Written by रयिाजुल हक
Monday, 26 September 2016 14:53

:□□□□□□□ □□□□□□□ □□□□ □□□□□□□, □□ □□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□ □□□□□□□□ :□□ □□ □□□□□□ □□□□□□□□ □□□□□ □□□□□ □□ □□ □□□□□□□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□□□ :□□□□□□□ □□□□□□□□ □□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□ □□□□□ :□□□□□□ □□□□□□□□ □□□□ □□□□ □□□□, □□□□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□ :

□□□□□□□□ □□

□□□□□□□ :पछिले हफ्ते करितराय गाँव में रूखसाना अपने दो बच्चों के साथ जल मरी। ऐसा लगा कि सरकारी योजनाएं भी उसके साथ ही जल गईं। गरीबों का पेट पालने का दावा करने वाली सरकारों को इस घटना ने आइना दखिा दयिा। घर का सूखा और कंगाल चूल्हा इस दर्दनाक व नर्िमम सामाजकि-राजनीतकि और प्रशासनकि हत्या का बयान कर रहा है। जबकि प्रशासन अब इस मामले की आग पर झूठ का पानी फेंक रहा है।

यह मामला यहां के मड़यिाहूं के सुरेरी इलाके का है। पेट की आग बुझाने के लएि इस परविार के पास कोई सहारा नहीं था। मंदबुद्धि बाबर पल्लेदारी करता है, जो थोड़ा बहुत कमाता उसी से पत्नी व बच्चों का पेट पालता था। उसके पास अंत्योदय व पात्र गृहस्थी कार्ड भी नहीं था, जसिसे सस्ते दर पर सरकारी अनाज घर आता। कभी गाँव का कोई व्यक्ति कोटेदार से सफिारशि कर देता तो थोड़ा सा केरोसनि मलि जाता। इससे भी बमुश्कलि घर में रोशनी आ पाती। मां मीना के पास एक राशन कार्ड है, लेकनि घर से अलग रहने के कारण उसका एक भी दाना बाबर के परविार को नहीं मलिता। घर में फाका होता तो बच्चों का रोना रूखसाना के कलेजा छलनी कर जाता। इसी बात पर उसका पति से झगड़ा भी होता। रववार को रूखसाना ने आखरिकार दुख भरी जदिगी से नाता तोड़ लयिा। साथ ही अपने दोनों बच्चों को भी इस दुनयिा से लेती गई।

जाँच में जुटा प्रशासन, नतीजा होगा टांय टांय फसि्स।

एडीएम उमाकांत त्रपिाठी ने बताया कि एसडीएम और तहसीलदार को मौके पर भेजा गया है। जाँच हो रही है कि आत्महत्या की वजह क्या थी। जल्द ही नतीजा सामने आ जाएगा। लेकनि प्रथम दृष्टि से तो मौत का कारण भुखमरी ही थी। अब प्रशासन अपनी नकामी छुपाने के लएि चाहे जो बताये। सबसे बड़ा सवाल यह है कि घर घर अन्त्योदय की जाँच कराने वाला प्रशासन अमीरों का कार्ड तो बनवा दे रहा है, पर जो उसके असली हक्दार है वो आज भी अपने हाथो मे राशन कार्ड का आनलाइन भरा फार्म लेकर जलिा पुर्ति कार्यालय का चक्कर कट रहे है। सरकारी तंत्र कोटेदार एवं जलिा प्रशासन की मलिी भगत से अमीरो के घरो मे तो राशन भरवा रहा है और जो अन्त्योदय के असली हक्दार है वो आत्महत्या करने पर मजबुर है। और जलिा प्रशासन एवं जनता के नुमाइदे अपनी अपनी जेबे गर्म करने के फेर मे है। गरीब ऐसे ही पेट भरने के लएि मरता रहा है और मरता रहेगा।

Written by रयिाजुल हक
Monday, 26 September 2016 14:53

शर्मनाक□ यद□कारण भुखमरी ही है तो रुखसाना केपडोसी, रिस्तेदार, गांव केप्रधान सभी को चुल्लू भर पानी में डूब मरना चाह□□ □कबेबस महिला का चूल्हा नहीं जल सक□ बहुत खुदगर्ज होता जा रहा है समाज□